प्रातः क्लास ओम शांति पिताश्री 22/5/68 मधुबन

ओम शांति। शिवभगवानुवाचः अपने शालीग्रामों प्रति। शिव भगवानुवाच है तो ज़रूर शरीर होगा तब तो वाच होगा ना। वाच्य के लिए मुख ज़रूर चाहिए, तो ज़रूर सुनने वाले को भी कान चाहिए। आत्मा को मुख चाहिए। अभी तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिल रही है। जिसको ही राम मत कहा जाता है। दूसरी फिर है रावण मत। ईश्वरीय मत और आसुरी मत। ईश्वरीय मत आधा कल्प चलती है। रावण मत भी आधा कल्प चलती है। अगर मुनष्य मत कहें वह भी तो आसुरी मत ही हुई। दैवी मत हुई ईश्वरीय मत। उनको राम सम्प्रदाय, इनको रावण सम्प्रदाय कहा जाता है। बाप दैवी मत दे देवता बनाते हैं। आधा–2 तो है ही। राम मत सतयुग–त्रेता, जन्म भी थोड़े; क्योंकि योगी लोग हैं और वह है रावण मत, जन्म भी बहुत; क्योंकि भोगी लोग हैं। इसलिए आयु भी कम होती है। सम्प्रदाय बहुत हो जाते हैं और बहुत दुःखी होते हैं। राम मत वाले भी फिर रावण मत से मिल जाते हैं। तो सारी दुनियाँ की रावण मत हो जाती है। फिर बाप आकर सभी को राम मत देते हैं। सतयुग में है राम मत। ईश्वरीय मत। उसको कहा जाता है स्वर्ग़। ईश्वरीय मत मिलने से स्वर्ग़ की स्थापना हो जाती है, आधा कल्प के लिए। वह जब पूरी हो जाती है तो फिर रावण राज्य होता है। उसको कहा जाता है, आसुरी मत। अभी अपन से पूछो हम आसुरी मत से क्या करते थे, ईश्वरीय मत से क्या कर रहे हैं? आगे जैसे कि वैश्यालय में थे वा नर्कवासी थे। फिर अभी स्वर्ग़ वसी बनते हैं, शिवालय में। सतयुग, त्रेता को कहा जाता है शिवालय। जिस नाम से स्थापना होती है तो ज़रूर उनका नाम भी होगा ना। तो वह शिवालय जहां देवताएँ रहते हैं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। रचयिता बाप की तुमको यह बातें समझा रहे हैं। क्या रच(ते) हैं वह भी तुम बच्चे समझते हो। सारी रचना इस समय उनको बुलाती है। हे! पतित–पावन वा हे! लिबरेटर रावण के राज्य से छुड़ाने वाले दुःख से छुड़ाने वाले..... अभी तुमको सुख का मालूम पड़ा है। तब ही इसको दुःख समझते हो। नहीं तो कई इनको दुःख थोड़े ही समझते हैं। जैसे बाप नॉलेजफुल है, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है, तुम भी नॉलेजफुल बनते हो। बीज में झाड़ की नॉलेज होती है ना; परंतु वह है जड़। अगर चैतन्य होता तो बता देता। तुम चैतन्य झाड़ के हो; इसलिए झाड़ को भी जानते हो। बाप को कहा ही जाता है, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। सत–चित आनंद स्वरूप। वह सत्य है, चैतन्य है। वह झाड़ है, जड़। यह है चैतन्य। इस झाड़ की उत्पत्ति, पालना, विनाश कैसे होता है यह भी कोई नहीं जानते। ऐसे नहीं नया झाड़ स्थापन होता है। यह कोई नहीं जानते। ऐसे नहीं नया झाड़ स्थापन होता है। यह भी बाप ने समझाया है। पुराने झाड़ वाले मुझे बुलाते हैं कि आकर लिबरेट करो रावण से; क्योंकि इस समय रावण राज्य है। मनुष्य कोई डिटेल को नहीं समझा सकते हैं। वह तो न रचयिता को न रचना को जानते हैं। ऋषि–मुनि आदि कोई भी नहीं जानते। बाप खुद बतला रहे हैं, मैं एक ही बार स्वर्ग़ बनाता हूँ। स्वर्ग़ के बाद फिर नर्क बनता है। रावण के आने से वाम मार्ग में चले जाते हैं। राम राज्य और रावण राज्य का अर्थ भी तुम ही समझाते हो। वह है पवित्र; इसलिए आयु भी बड़ी होती है। हेल्थ–वेल्थ–हैप्पीनेस सभी हैं। तुम यहां आए हो बाप से वर्सा लेने। हेल्थ–वेल्थ–हैप्पीनेस का। क्योंकि स्वर्ग़ में कब दुःख होता नहीं। तुम्हारे दिल में है हम कल्प–2 इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर यह पुरुषार्थ करते हैं। नाम ही कैसा अच्छा है और कोई युग को पुरुषोत्तम थोड़े ही कहा जाता है। उनमें तो सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं। बाप को बुलाते भी हैं, सिमरण भी करते रहते हैं। परंतु यह मालूम नहीं रहता कि बाप कब आवेंगे। पुकारते तो हैं ओ गॉड फादर, लिबरेट करो, गाइड करो। लिबरेटर बनेंगे तो ज़रूर आना पड़ेगा ना। फिर गाइड बन ले जाना पड़े। बच्चों को बहुत दिनों देखते हैं। अच्छी रीति बच्चों को देख बड़ा खुश होते हैं। सभी तो एक जैसे नहीं हैं। वह हैं हद के बाप। यह है बेहद का बाप। बाबा ने समझाया है पुरुष क्रियटर भी है। रचना रच उनकी पालना भी करते हैं। पुनर्जन्म तो लेना ही पड़ता है। किसको 10 किसको 12 बच्चे होते हैं; परंतु वह सभी हैं हद के सुख। जिसके लिए ही काग विष्टा समान समझते हैं

बिल्कुल तमोप्रधान बन जाते हैं। तमोप्रधान में सुख बहुत थोड़ा होता है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बाप बहुत ही सहज बताते हैं। बाप को ही ऑलमाईटी अथॉरिटी कहा जाता है। मनुष्य समझते हैं गॉड ऑलमाईटी अथॉरिटी है। तो वह जो चाहे सो कर सकते हैं। मरे हुए को ज़िन्दा कर सकते हैं। एक बार कोई ने लिखा अगर आप भगवान हैं तो मक्खी को ज़िन्दा कर दिखाओ। ऐसे–2 ढेर पुरुष पूछते हैं। ईडियट लोग हैं ना। बाप समझाते हैं बंदर सम्प्रदाय है। तुमको बाप ताकत देते हैं जिससे तुम रावण पर जीत पहनते हो। बंदर से भी मंदिर लायक बनते हो। उन्होंने फिर क्या–2 बना दिया। वास्तव में तुम सभी सीताएँ (हो) तुम सभी को रावण से छुड़ाया है। सभी रावण सम्प्रदाय हैं ना। रावण द्वारा कब तुमको सुख नहीं मिल सकता। इस समय सभी रावण के जेल में हैं। राम के जेल में नहीं कहेंगे। राम आते ही हैं रावण के जेल से छुड़ाने। रावण 5 शीश वाला बनाते हैं। उनको 10 भुजाएँ दिखाते हैं। बाप ने समझाया है 5 स्त्री के 5 पुरुष के। एक–एक में 5 विका(र) हैं ना। उनको कहते ही हैं रावण राज्य वा 5 विकार रूपी माया का राज्य। ऐसे नहीं कहेंगे इनके पास बहुत माया है। माया का नशा चढ़ा हुआ है। बहुत धन को माया नहीं कहा जाता। धन को सम्पत्ति कहा जाता (है) तुम बच्चों को सम्पत्ति आदि बहुत मिलती है। तुमको कुछ मांगने की दरकार ही नहीं; क्योंकि यह पढ़ाई (है) ना। पढ़ाई में मांगना होता है क्या। टीचर जो पढ़ावेंगे वह स्टूडेंट पढ़ेंगे। जितना जो पढ़ेंगे। मांगने की (बात) ही नहीं। इसमें पवित्रता भी चाहिए। एक अक्षर की वैल्यु देखो कितनी है। पदमापदम। वह कौन–सा अक्षर है। बाप को पहचानो याद करो। बाप ने अपनी पहचान दी है। जैसे आत्मा बिंदी है मैं भी सुप्रीम आत्मा हूँ। वह तो एवर पवित्र है। शांति का, ज्ञान का, पवित्रता सागर है। एक की ही महिमा है। सभी का पौज़ीशन अपना–2 है। ईश्वर सर्वव्यापी कहना इसको कहा जाता है अंधेर नगरी चौपट राजा.....ईश्वर थोड़े ही दुःख वा पुनर्जन्म लेते हैं। कोई फिर कहते 24 अवतार लेते हैं। कच्छ–मच्छ अवतार, बराह अवतार, परशुराम अवतार.....है सभी फालतू। अभी तुम समझते हो शास्त्रों में क्या–2 बातें लिख दी हैं। सर्वव्यापी मनुष्य सम्प्रदाय में है। फिर जंगली जनावरों में हैं, फिर पत्थर–ठिक्कर में हैं। नाटक भी बनाई है कण–कण (में भगवान।) जिन्होंने नाटक देखा होगा वह जानते होंगे। महावीर बच्चे जो हैं उनको तो बाबा कहते हैं तुम भल कहां भी जाओ। वायस्कोप में जाओ। सिर्फ़ साक्षी हो देखना चाहिए क्या तमाशा करते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो सभी को रावण ने चोरी किया है जो भी भक्त हैं। अभी तुम राम राज्य की स्थापना कर रहे हो। रावण को खलास कर देते हो। यह है बेहद की बात। वह कहानी जो बनाई है। अभी बाप कहते हैं, मैं तुमको रावण राज्य से छुड़ाता हूँ। तुम्हारी है शिव शक्ति सेना। शिव ऑलमाईटी है ना। शिव से शक्ति लेने वाले शिव की सेना तुम हो। यहां फिर आर्टीफ़िशियल भी शिव सेना निकली है। अभी तुम्हारा नाम क्या रखें। तुम्हारा तो नाम रखा है प्रजापिता ब्रह्मा कुमार–कुमारियाँ। शिव के तो सभ संतान हैं। सारी वर्ल्ड की आत्माएँ उनकी संतान हैं। शिव से तुमको शक्ति मिलती है। तुम शिव से शक्ति लेने वाले हो। शिवबाबा तुमको ज्ञान सिखाते हैं जिससे इतनी बड़ी शक्ति मिलती है। जो आधा कल्प तुम सारे विश्व पर राज्य करते हो। तुम्हारा यह ह(है) योगबल की शक्ति। और उन्हों की है बाहुबल की। भारत का प्राचीन राजयोग गाया हुआ है। उनका है बाहुबल। चाहते हैं भारत का प्राचीन योग सीखने जिससे पैराडाइज़ स्थापन हुआ। कहते भी हैं क्राइस्ट से इतने वर्ष पहले पैराडाइज़ था। वह कैसे बना? योग से। तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले सन्यासी। वह तो घर–बार छोड़ विधवा, आरफ़न बना जाते हैं जंगल में। वह कोई नई दुनियां में नहीं जाते हैं। जंगल में चले जाते हैं। उस समय सतोप्रधान होने कारण उनमें कशिश रहती है। जो फॉलोवर जाकर उनको वहां भोजन आदि पहुँचाते हैं। पहाड़ो आ(दि) पर बहुत जाकर रहते हैं। अभी नहीं रह सकते। यह तो तमोप्रधान बन गए हैं। जब सतोप्रधान थे तो रह स(कते) थे। अभी तो तमोप्रधान होने कारण सभी यहां आ गए हैं। हरेक पहले सतोप्रधान होते हैं फिर तुम तमोप्रधान (।)

ड्रामा अनुसार हरेक को अपना पार्ट मिला हुआ है। इतनी छोटी बिंदी में कितना पार्ट है इनको कुदरत ही कहेंगे। इतनी छोटी बिंदी में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। अभी आत्मा तो तमोप्रधान हो गई है। आयरन एज्ड है ना। बाप तो एवर शक्तिवान गोल्डेन एज्ड हैं। अभी तुम उनसे शक्ति लेते हो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ऐसे नहीं कि हज़ारों सूर्यो से तेजोमय है। वह तो जिसको जो भावन बैठता है उसी भावना से देखते हैं भगवान हज़ार सूर्यों से तेजोमय है तो वह देखते हैं। आँख लाल हो जाती है। बस करो हम सहन नहीं कर सकते हैं। बाप कहते हैं वह सभी भक्ति मार्ग के संस्कार हैं। यह तो नॉलेज है। इसमें तो पढ़ना है। बाप टीचर भी है पढ़ा रहे हैं। हमको कहते हैं, तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। भक्ति मार्ग के लिए बाप ने समझाया है हियर नो ईविल ..... मनुष्यों को तो पता नहीं है यह किसने कहा। असल में बंदर का चित्र बनाते थे। जपान से आते थे। अभी तो मनुष्यों का बनाते रहते हैं। बाबा ने भी नलनी का बनाया था। भकित मार्ग की बातें बिल्कुल न सुनो। भक्ति मार्ग का मनुष्यों को नशा कितना है। भक्ति मार्ग का राज्य है ना। अभी होता है ज्ञान का राज्य। फ़र्क हो जाता है ना। भक्ति कल्ट और ज्ञान कल्ट। बच्चे समझते हैं बरोबर ज्ञान से सुख होता है। भक्ति से सीढ़ी नीचे ही उतरे हैं। हम पहले सतयुग में जाते हैं। फिर जूं मिसल आते–2 नीचे उतरते हैं। 1250 वर्ष में दो कला कम हो जाती है। चन्द्रमा का भी मिसाल है ना। चन्द्रमा को ग्रहण लगता है ना। कलाएँ कम होती हैं फिर 16 कला हो जाती है। वह है अल्पकाल की बात। यह तो बेहद की बात है। इस समय सभी पर राहू का ग्रहण है। ऊँच ते ऊँच है वह बृहस्पत की दशा। नीच में नीच है राहू की दशा। एकदम दिवाला कर देते हैं। वह बृहस्पत की दशा से हम चढ़ते हैं। वह बेहद की बात को जानते ही नहीं। अभी राहू की दशा तो सभी पर बरोबर है। यह (तुम) जानते हो और कोई नहीं जानते। राहू की दशा से इनसॉलवेन्ट बनते हो। बृहस्पति की दशा से सॉलवेन्ट बनते हो। भारत कितना सॉलवेन्ट था। एक ही भारत था। सतयुग में राम राज्य पवित्र राज्य होता है। जिसकी महिमा अपवित्र राज्य वाले गाते हैं। मैं निर्गुण हारे में कोई गुण ना ही। ऐसे संस्थाएँ भी बनाते हैं। निर्गुण (संस)था। अरे यह तो सारी दुनियां निर्गुण संस्था है। एक की बात थोड़े ही है। बच्चे को हमेशा महात्मा कहा जाता है। तुम फिर कहते हो कोई गुण ना हीं। यह तो सारी दुनियां है जिनमें कोई गुण न होने के कारण राहू की दशा है। अभी बाप कहते हैं दे दान..... अभी जाना तो सभी को है ना। देह के सभी धर्म को छोड़ अपन को आत्मा निश्चय करो। तुमको अभी वापस जाना है। पवित्र न होने कारण वापस कोई जा नहीं सकते। बाप अभ(ी) पवित्र होने की युक्ति बताते हैं। बेहद के बाप को याद करो। कई कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चों पतित–पावन बाप को भूल जावेंगे तो पावन कैसे बनेंगे। विचार करो। यह क्या कहते हो। जनावर भी कब ऐसे नहीं कहे कि हम बाप को भूल जाते हैं। तुम क्या कहते हो। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ ना। तुम आए हो बेहद का वर्सा लेने। निराकार बाप साकार में आवे तब तो पढ़ावें ना। अभी तुम जानते हो बाप ने इसमें प्रवेश किया है। दो है बाप–दादा। दोनों की आत्मा भृकुटि के बीच है। और क(हाँ) होंगे। कहते भी हैं बाप–दादा तो ज़रूर दो आत्माएँ होंगी। शिवबाबा और ब्रह्मा की आत्मा। तुम सभी बने हो प्रजापिता ब्रह्मा के कुमार–कुमारियाँ। तुमको नॉलज मिल रही है। जानते हो हम भाई–2 हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा हम बहन–भाई बनते हैं। यह याद पक्की चाहिए; परंतु बाबा देखते हैं बहन–भाई भी नाम रूप की कशिश होती है बहुतों को विकल्प आते हैं। अच्छा शरीर देखकर विकल्प आते हैं ना। अभी बा(प) कहते हैं अपन को आत्मा भाई–2 समझो। तो कुछ भी नहीं होगा। स्त्री कशिश करती है। उनका रूप भी ऐसा बना हुआ है। फ़िमेल को ही ब्यूटी की प्राइज़ मिलती है। मेल को ब्यूटी की प्राइज़ मिली ऐसा कब सुना? (फ़िमेल) कितना मोहित करती हैं बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो। भा(ई)–2 देखो। आत्माएँ सभी ब्रदर्स ही ठहरे।

ब्रदर्स है तो बाप ज़रूर चाहिए। सभी का बाप एक है। सभी बाप को याद करते हैं। अभी बाप कहते हैं, सतोप्रधान बनना है तो मामेकं याद करो। जितना याद करेंगे तो कट निकलती जावेगी और खुशी का पारा चढ़ेगा। कशिश होती रहेगी। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सभी का फ़ीचर्स अलग–2 होते हैं। सारी दुनियां के जो भी मनुष्य मात्र हैं आत्मा भल एक जैसी है; परंतु फ़ीचर्स सभी के अलग–2 हैं। फिर वही रिपीट होगी अपने–2 समय पर। कितना बड़ा बेहद का ड्रामा है। सभी एक्टर्स है। जन्म व जन्म फ़ीचर्स अलग होते हैं। एक न मिले दूसरे से। वह लोग कहते हैं अनेक दुनियाएँ हैं। चन्द्रमा में भी दुनियां है। आगे तो वहां भी ज़मीन लेने लिए बोलते थे। अभ वह बंद कर दिया है। उन्हों का है अशुद्ध घमण्ड। अशुद्ध घमण्ड वाले विनाश को प्राप्त होते हैं। तुम शुद्ध घमण्ड वाले बाप से वर्सा लेते हो। आत्मा सेकण्ड में पार चली जाती है। आत्मा से तीखा और कुछ है नहीं। उन्हों के विमान आदि तो उस पार जा नहीं सकते। वह तो नुकसान ही कर देंगे। एक स्टार गिर जाए तो कितना नुकसान हो जाए। यह तुम आगे चलकर देखेंगे। जो चीज़ दिव्य दृष्टि से तीखी जाती है वह फिर प्रैक्टिकल में देखेंगे। देवताएँ स्वर्ग़ में होते हैं ना। वहां यह ज्ञान नहीं रहेगा। कि हमको फिर नर्क में जाना है। यह ज्ञान अभी तुमको है। वहां यह मालूम हो तो बादशाही की खुशी ही चली जाए। बाप बच्चों को समझाते हैं तुम्हारे दुःख के बहुत टाइम, बहुत थोड़े ही दिन हैं। पिछाड़ी में थोड़ा समय दुःखों के पहाड़ गिरते हैं। रक्त की नदियाँ बहती हैं। हाय–हाय होती है फिर होने की है जय–जयकार। दुनियां नई बनेगी तो पुरानी दुनियां वाले हाय–हाय करेंगे। पीछे फिर जय–जयकार होगी। हाय–हायकार कलयुग में। जय–जयकार होते हैं सतयुग में। तुम बच्चे अभी रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अंत को जानते हो। यह भी समझते हो दैवी गुण चाहिए। खान–पान की भी खबरदारी चाहिए। कहा जाता है सिरगेट छोड़ो तो बीमार हो जाते। फिर कहा जाता है इनकी तकदीर की भावी। बाप इसमें क्या करे। बाप टीचर सभी को तदबीर एक जैसे ही बताते हैं। फिर जिसकी जो तकदीर। बाप तो सभी को समझाते हैं फिर हरेक के तकदीर पर है। कल्प पहले जिसकी जो तकदीर बनी होगी। यह सभी समझने बी बातें हैं। जिसको जो सर्विस वा धंधा आदि है भल वह भी करे। काम आदि करते बाप को याद करे। भक्ति मार्ग में तो तुम अनेको को याद करते थे। जो आया उनको याद किया। अभी बाप कहते हैं एक को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। शरीर को याद न करना है। वह है भूत की पूजा। भूत की याद आती है ना। 5 तत्वों की पूजा करते हैं। पानी की पूजा, मच्छियों की पूजा करते हैं। चीट्टियों को भी खिलाते रहते हैं। कहेंगे ... उनको दो तो पालना होगी, उसकी आशीर्वाद तुमको मिलेगी। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के रास्ते बताते हैं। बाप तो आते ही हैं यहां। रथ पर सवार हो आते हैं। रथ है यह। इन्होंने फिर घोड़े गाड़ी का रथ बना दिया है। कम से कम मोटर तो होनी चाहिए। यह बहुत ही समझने की बातें हैं। सिवाय बाप के और कोई क्वालिफ़िकेशन बदल नहीं सकते। वह तो अपन को असुर ही नहीं समझते तो देवता बनने का पुरुषार्थ भी कैसे करें। बाप कहते हैं तुम पूज्य देवता थे तो बड़े रॉयल थे। एमऑब्जेक्ट के चित्र भी हैं। ऐसा कोई सतसंग नहीं जिसको एमऑब्जेक्ट दिखाते हैं। कुछ भी समझ नहीं सकते। यह भी बच्चों को समझाया तुम पढ़ाने वाली ब्राह्मणियों से भी ऊँच पद पा सकते हो। हार्टफेल मत हो। ऐसे मत समझो हम देरी से आए हैं, टीचर से आगे कैसे जावेंगे। बाप कहते हैं टीचर से तुम ऊँच पद पा सकते हो। तुम भी टीचर बन सकते हो। अच्छी सर्विस कर सकते हो। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।